# 25

# गया में बिहार प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का इक्कीसवाँ अधिवेशन

गया का यह अधिवेशन बहुत शानदार था और कामताबाबू के बाद मेरी भूमिका ही इसमें प्रमुख थी। हजारों रुपये चंदा उगाहने में सुबह से शाम तक मुझे मोटर से चक्कर लगाना तो पड़ता ही था, इसके अतिरिक्त प्रसादजी के नाटक में भी, जिसका रिहर्सल मेरे घर की बैठक में ही होता था, प्रमुख भूमिका का निर्वाह भी मुझे ही करना था। पहले चंद्रगुप्त जो उस नाटक का हीरो था, उसकी भूमिका मैंने ले रक्खी थी परंतु ध्रुवस्वामिनी (नायिका) का अभिनय करनेवाले लड़के के ऐन मौके पर हाथ खींच लेने से चंद्रगुप्त के बजाय मुझे ध्रुवस्वामिनी का रोल सँभालना पड़ा अर्थात नायक के बदले नायिका बनना पड़ा। कार्य का बोझ बढ़ जाने से अंत में नाटक की भूमिका से मुझे पूर्णतः अलग हो जाना पड़ा। तीन दिनों के आयोजन में पहले दिन कविसम्मेलन, दूसरे दिन कविदरबार और तीसरे दिन ध्रुवस्वामिनी का आयोजन था। इसके अतिरिक्त समाजशास्त्र परिषद्, विज्ञान-परिषद्, साहित्य-परिषद्, दर्शन-परिषद्, इतिहास-परिषद्, पत्रकार-परिषद् आदि नौ परिषदों के आयोजन किये गये थे जिनमें प्रत्येक के सभापति का छपा हुआ भाषण पढ़ा जाना था। सारे गया नगर में 21वें अधिवेशन के प्रतीक 21 द्वार सजाये गये थे। मेरी गया से हजारीबाग बस-सेवा की एक अतिरिक्त बस प्रतिनिधियों को आवास से भोजन के लिए होटल और होटल से आयोजन के लिए गंगामहल में बने पंडाल तक लाने-लेजाने में संलग्न थी। इस अधिवेशन में नाटकवाली रात में भगवान ने ही मेरे प्राणों की रक्षा की। मैंने नाटक के लिए ऊँचे मंच का निर्माण कराया था जिसमें सब से आगे स्त्रियों के बैठने का प्रबंध था। उसके बाद एक रस्सी के घेरे के पीछे पुरुषों की भीड़ को बैठाने का प्रबंध था। भीड़ के बढ़ जाने से रस्सी का घेरा टूट गया। पुरुषों की भीड़ मंच की ओर बढ़ी जहाँ स्त्रियाँ बैठी थी। गंगामहल में जो सभास्थल था,

उसके चारों ओर पक्की दीवाल का घेरा था अतः भीड़ के बढ़ जाने से पुरुषों को पीछे की ओर हटने का स्थान नहीं था और मंच की ओर बढ़ने के सिवा कोई और चारा ही नहीं था। स्त्रियों के लिए भी ऊँचे मंच की रुकावट के कारण आगे बढ़ने का तिल भर स्थान नहीं था। मैंने स्थिति भाँप ली। तनिक-सा बिलंब होने से आगे बैठी हुई स्त्रियाँ पुरुषों के पाँवों से कुचल दी जातीं। उनके साथ दुराचरण की भी संभावना थी। चूँकि अधिवेशन की सारी जिम्मेदारी एक प्रकार से मेरी थी अतः मैं दूसरे दिन गया नगर में मुँह दिखलाने की स्थिति में भी नहीं रहता। **संभावितस्य चाकीर्तिमरणादतिरिच्यते** के अनुसार मैंने सोचा कि यदि भीड़ में मैं पहले कुचल दिया जाऊँगा तो प्राण तो चले जायेंगे पर मेरी कीर्ति बच जायगी। मैं भीड़ के आगे हाथ फैलाकर खड़ा हो गया और बोला, 'आगे आपकी माँ-बहनें बैठी हैं, एक कदम भी बिना मुझे रौंदे कोई आगे नहीं बढ़ सकता।' दूर खड़े स्वयंसेवकों ने मेरी स्थिति भाँप ली। भीड़ भी मुझे हाथ फैलाये देखकर और मेरी बात सुनकर ठिठक गयी। उसमें से भी दस बीस व्यक्ति मेरी बगल में मंच के विपरीत मुँह फेरकर खड़े हो गये। उन लोगों ने तथा कालेज से आये विद्यार्थियों ने जो स्वयंसेवकों का काम कर रहे थे, एक जुट होकर अपने हाथ आपस में जोड़ दिये तथा भीड़ के आगे एक सुदृढ़ रुकावट बना दी। भीड़ के आगे के व्यक्ति भी आगे स्त्रियों को बैठी देखकर अपनी शक्ति भर रुकने का प्रयत्न कर रहे थे। इस प्रकार एक भयानक दुर्घटना टल गयी।